अभ्यास पत्रक

पाठ – साखी (कबीर)

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

1. काव्यांश पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

"ऐसी बाणी बोलिए, मन का आपा खोइ।
औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होइ॥"

1. 'ऐसी बाणी' से कबीर का क्या तात्पर्य है?

उत्तर - .....
.....

2. 'मन का आपा खोइ' का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - .....
.....

3. इन पंक्तियों में 'शीतलता' किसके लिए प्रयुक्त हुई है?

उत्तर - .....
.....

2. Assertion-Reason आधारित प्रश्न – (2x1=2 अंक)

4. **कथन:** कबीरदास के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के लिए अहंकार का त्याग आवश्यक है।
   कारण: ईश्वर और अहंकार एक साथ एक ही हृदय में वास नहीं कर सकते।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है। (ग) A: सही, R: गलत
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है। (घ) A: गलत, R: सही

5. **कथन:** ईश्वर मंदिर, तीर्थ या पोथियों में मिलते हैं।
   कारण: उन्होंने अपने आपको ग्रंथों के माध्यम से ही प्रकट किया है।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है। (ग) A: सही, R: गलत
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है। (घ) A: गलत, R: सही

3. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs) – (5x1=5 अंक)

6. "कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढे बन माहि" पंक्ति का भाव है—
   (क) हिरण जंगल में भटकता है (ख) ज्ञान खोजा नहीं, महसूस किया जाता है
   (ग) ईश्वर मन में है, फिर भी मनुष्य उसे बाहर ढूँढता है (घ) कस्तूरी मूल्यवान होती है

7. "जब मैं था तब हरि नहीं" में 'मैं' का अर्थ है—
   (क) शरीर (ख) अहंकार (ग) मन (घ) आत्मा

8. 'पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोइ' का भाव है—
   (क) ग्रंथ पढ़ना ही ज्ञान है (ख) ज्ञान पुस्तकों में ही मिलता है
   (ग) भक्ति और अनुभव ही सच्चा ज्ञान है (घ) पंडित बनना कठिन है

9. 'बिरह भुवंगम तन बसै' का अर्थ है—
   (क) विरह विष के समान शरीर में लगता है (ख) राम के वियोग से प्रेम बढ़ता है
   (ग) प्रेम विष है (घ) मनुष्य व्यथित नहीं होता

10. कबीर की साखियाँ किस भाषा में लिखी गई हैं?
    (क) संस्कृत (ख) ब्रज (ग) सधुक्कड़ी (घ) उर्दू

eGyanarchive

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. "निंदक नेड़ा राखिए" का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

12. "राम बियोगी ना जिवै" से कवि का क्या आशय है?

उत्तर - .....

.....

.....

13. कबीर के अनुसार मनुष्य ईश्वर को क्यों नहीं देख पाता?

उत्तर - .....

.....

.....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. "जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं"— इस पंक्ति के माध्यम से कबीर ने क्या आध्यात्मिक संदेश दिया है?

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. "कबीर की साखियाँ समाज को आत्मज्ञान, सहिष्णुता और ईश्वर प्रेम का मार्ग दिखाती हैं"— इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

उत्तर कुंजी

1. ऐसी भाषा जो मधुर, नम्र और बिना अहंकार की हो।
2. 'अपना आपा खोइ' का अर्थ है— अहंकार का त्याग।
3. यह मीठी वाणी की शांति और संतोषजनक प्रभाव का प्रतीक है।
4. (क)
5. (घ)
6. (ग)
7. (ख)
8. (ग)
9. (अ)
10. (ग)
11. निंदक हमारे दोषों को उजागर कर हमें सुधारने का अवसर देते हैं, इसलिए उन्हें पास रखना चाहिए।
12. ईश्वर से वियोग की पीड़ा इतनी गहरी होती है कि वह व्यक्ति या तो जी नहीं पाता या पागल जैसा हो जाता है।
13. क्योंकि वह बाहरी पूजा-पाठ और अहंकार में उलझा रहता है, आत्म-चिंतन नहीं करता।

14. कबीरदास कहते हैं कि जब मनुष्य में 'मैं' यानी अहंकार होता है, तब उसमें ईश्वर का वास नहीं हो सकता। लेकिन जब वह अपने 'मैं' का त्याग कर देता है, तो परमात्मा उसके हृदय में निवास करता है। ज्ञान का प्रकाश होने पर अहंकार का अंधकार दूर हो जाता है। यही आत्मज्ञान का आरंभ है और अध्यात्म की सर्वोच्च स्थिति है।

15. कबीरदास की साखियाँ भक्ति, ज्ञान और सामाजिक चेतना से भरपूर हैं। वे ईश्वर की बाहरी पूजा को त्यागकर आत्मा में खोजने की प्रेरणा देते हैं। उनकी भाषा सरल, लोकप्रचलित और अनुभवजन्य है। उन्होंने अहंकार, पाखंड, अज्ञानता और सामाजिक भेदभाव की आलोचना की है। वे प्रेम, विनय, सहिष्णुता और आत्मचिंतन का संदेश देते हैं। कबीर ने बताया कि सच्चा ज्ञानी वही है जो प्रेम के एक अक्षर को भी समझ ले। उनकी साखियाँ आज भी समाज को दिशा देती हैं— कि सच्चा धर्म न कर्मकांड में है, न कपट में, बल्कि सेवा, भक्ति और सच्चे आचरण में है।

egyanarchive